Written by कुमार सौवीर
Monday, 08 January 2018 23:49

: □□□□□□□□ □□ □□□□□□ □□□□ □□□□□ □□□□□□□□ □□ □□□□□ □□□□□□□□□□□□□ □□ □□ □□□□□ □□ □□□□□ □□ □□□□□□□□ □□□□ □□□□□ : □□□□□□ □□ □□□□ □□ □□ □□□□□ □□□□□ □□ □□□□□□□□□□ □□ □□□□□ □□□□□□□□ □□□□□□□ □□□□□□□□□□ :□ □□ □□□□□ □□□□□ □□ □□□□ □□□□ □□□□-□□□□□□□□ □□□□□ □□ □□□□ □□ □□□□□ □□□□□□□□□□□ □□□□□ □□ □□□□□□ :

□□□□□□ □□□□□□

□□□□□ : थाने में पहुंचे □क मासूम बच्□चे की आंख में उमड़े आंसुओं को पोंछने की कवायद करना ऐसा कोई ऐतिहासकि घटना नहीं है, जसिके लि□ आने वाली सदयिों प्रभावति होती रहें□ ऐसा काम तो ऐसा कोई भी काम कर सकता है कि जसिके सीने में दलि धड़कता होगा□ ऐसा करने वाले के बारे में इतना जरूर है कि वह व्□यक्ति निहायत भावुक है□ लेकनि इतना जरूर है कि जसि तरह इस पूरे मामले में इटावा के बड़ा दारोगा वैभव कृष्□ण ने कार्रवाई की है, वह उनकी भावुकता नहीं, बल्कि उनकी संवेदनशीलता का प्रतीक है□ और यही संवेदनशीलता इस छोटी सी घटना को आने वाली पुश्□तों-सदयिों तक गहरे तक प्रभावति करती रहेंगी□

मैं कभी भी वैभव कृष्□ण से नहीं मलिा□ लेकनि इटावा की घटना से लगता है कि अंतरमन के स्□तर पर वैभव से मेरी खासी करीबी रशि्□तेदारी है□ अपने जलि के मुखयिा के तौर पर वैभव कृष्□ण के नेतृत्□व में उनकी टोली ने जो काम कयिा है वह ऐतिहासकि है□ यह घटना से भवष्यि में बच्चे और उस जैसे अभभिावकों के साथ ही साथ समाज में पुलसिगि का दायति्□व सम्□भाले लोग हमारे दीगर सामाजकि तंतुओं को जोड़ने में यह घटना बेहद महत्वपूर्ण साबति करेंगे□ जहां अभभिावक वर्ग अपनी भूमकिाओं में संशोधन करने पर बाध्य होगा, जहां □क बच्चों को अपनी आजादी का नया सेनानी बनने का मार्ग प्रशस्□त होगा, जहां पड़ोस में भी ऐसे सामाजकि मसलों पर जागरूकता फैलाने का रास्□ता खुलेगा, जहां समाज के वभिनि्□न तन्□तुओं-पक्षों की बातों को सुनने के लि□ समाज के दीगर पक्ष-लोग भी मौजूद होंगे, वहीं पुलसिवाले भी इस बारे में सोचेंगे जरुर, कि ऐसे मसलों पर उनका नजरयिा और लाइन ऑफ □क्शन क्या हो□ कहने की जरूरत नहीं कि इसी सलिसलि के बढ़ने से ही समाज में परस्□पर वशि्□वास, □कजुटता और आंतरकि सामाजकि कसाव का भाव उमड़ेगा□

□□□□□□□ □□□□□□□ □□ □□□□□□ □□□□□□ □□ □□□□□□ □□ □□□□ □□□□□□ □□□□□ :- □□□□ □□□□□□□

देखयि, समस्या यह है कि पछिले कुछ दशकों से हम परवार को नजिी जागीर तौर पर देखने लगे हैं□ खासतौर से तब जब से गांव का ढांचा बखिरने लगा है,

Written by कुमार सौवीर
Monday, 08 January 2018 23:49

पारिवारिक रिश्ते बुरी तरह खदबदाने लगे हैं। उसके साथ ही साथ, जब से संयुक्त पारिवारिक इकाइयां ध्वस्त होने लगी हैं, तब से ही समाज की सबसे कमजोर कड़ी साबित बनता जा रहा है परिवार का बच्चा, और दूसरे स्तर पर वृद्ध-जन। पारिवारिक तनाव उपजने, भड़कने लगे हैं। झगड़ों का सिलसिला बेहिसाब बढ़ने लगा है। जो पड़ोसी हमारे सोचने खाने-पीने रहने-सोचने के हमसफ़र हुआ करते थे, अब उपभोक्ता संस्कृति में समाज में खुद अपने आप में रहते हुए भी समाज में कट से जाते हैं। जब परिवार एकल और सूक्ष्म परिवार इकाई में तब्दील हुआ, तो पड़ोसी में भी भाईचारा के सारे रिश्ते बिखर गये। वह पुलिस वाले, जिनका दायित्व लोगों की बातचीत सुनना और उनका समाधान खोजना होता था, पीड़ित जन को सुरक्षा देना हुआ करता था, वह अब अक्सर सरेआम लूट, मनमानी और हिंसा पर आमादा होते हैं दिख जाते हैं। पुलिस का चरित्र आम आदमी को इंसान नहीं बल्कि अब हलाल होने की हालत पहुंच चुके मुर्गा समझने की प्रवृत्ति पाल बैठा है।

[illegible]:-

[illegible]